तुम बच्चों को कहा जाता है आस्तिक बच्चे। ब्राह्मण ही आस्तिक होते हैं। यह ब्राह्मण धर्म है जो ब्रह्मा द्वारा बाप बैठ स्थापना करते हैं। तो ब्राह्मण धर्म वाले ही आस्तिक हैं। बाप द्वारा ही बाप को जानते हैं। अग्रेज़ी में कहा जाता है फादर शोज़ सन। सन के साथ डॉटर (लड़की) भी होती है; परन्तु फादर (बाप) निराकार है। बच्चों को ही कहेंगे फादर शोज़ सन। बाप निराकार है तो आत्माएँ भी निराकार हैं। निराकार बाप बैठ निराकार बच्चों को समझाते हैं। और कोई मनुष्य मात्र ऐसे नहीं समझा सकते। अब तुम बच्चे जानते हो हम भी नास्तिक थे। सारी दुनिया नास्तिक है अर्थात् बाप को नहीं जानते। तो उनको जानवर मिसल कहेंगे। हैं तो मनुष्य। मनुष्य मात्र तुम सब नास्तिक थे। अब जब तुम आकर हमारे बने हो ब्रह्मा द्वारा तो तुम आस्तिक बन पड़े हो। बाप को ना जानने कारण बाप की रचना को भी नहीं जान सकते और वर्सा भी नहीं ले सकते। तुम बाप को जानने से वर्सा भी लेते हो। सद्गति दाता वो ही बाप पतित–पावन है। बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। कितना फर्क है। है तो वो भी मनुष्य। सूरत मनुष्य की है; परन्तु सीरत बंदर जैसी है। तुम्हारी भी ऐसे हैं। अभी तुम आस्तिक बने हो। भल हो मनुष्य; परन्तु चाल देवताओं जैसी होती जाती है। आस्तिक बन बाप से वर्सा लेने लायक बनते हो। इसलिए तुमको दैवी फूल कहा जाता है। यह भारत फूलों का बगीचा था। देवी–देवताएँ बहुत सुखी थे। इस समय तो सब दुखी हैं। यह काँटों का जंगल है। अभी तुम जानते हो सुखधाम किसको, दुखधाम किसको कहा जाता है। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते। यादव–कौरव सम्प्रदाय भी हैं। तुम हो पांडव सम्प्रदाय। पांडवों की बड़ी गुप्त राजधानी है। पांडव राज्य कहते हैं ना; परन्तु तुम पांडवों पास तो राजधानी है नहीं। जिसके लिए लिखा है कि खेल में द्रौपदी को दाँव में रखा। यह तो बात हो नहीं सकती। यहाँ तुमको 3 पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते और भविष्य में 21 जन्मों लिए तुम बहुत साहुकार बनते हो। इसलिए गाया जाता है अति इन्द्रिय सुख गोपीवल्लभ की गोप–गोपियों से पूछो। अभी काँटों से फूल बनने (अधूरी मुरली)